भारतीय शास्त्रीय नृत्यकलाएँ : कल, आज और कल

मधुलिका सिंह
शोध छात्रा ललित कला एवं संगीत
विभाग दीनदयाल उपाध्याय
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारां ा – गाना, बजाना और नाचना प्रफुल्लित मन की स्वभाविक क्रियाएँ है, जो प ा–पक्षी, कीट–पतंग, देव–दानव और मनुश्य सभी में पाई जाती है। इन स्वभाविक क्रियाओं को जब कोई व्यवस्था दी जाती है तो उसे कला कहते है। प्रकृति भी उस व्यवस्था का पालन करती है, जैसे खिले हुए पुश्पों का एक नि ा चत आकार, रंग और नि ा चत गंध होती है। यह कभी सम्भवन नहीं कि चमेली के खिले हुए फूलों से गेंदा या गुलाब की गंध आ जाए या पपीते के वृक्ष पर आम या केले लग जाए। इस सबके पीछे स्पन्दन की कोई ऐसी भाक्ति अव य काय्र करती है, जो अपनी लय में कोई व्यतिक्रम नहीं होने देती, क्योंकि क्रम ही जीवन है और व्यतिक्रम प्रलय। इस दिव्य भाक्ति से प्रभावित होकर पूरी सृश्टि सन्तुलित हो रही है।

मन में उठे सुख और दुःख की अनुभूतियाँ जब गीत बनकर गूंजने लगती है, तो उन्हीं को विभिन्न नामों से पुकार कर किसी न किसी राग या धुन का नाम दे दिया जाता है। ठीक उसी प्रकार जब चेश्टाओं द्वारा अनुभूतियाँ व्यक्त होती है, तो उन्हें विभिन्न मुद्राओं और अगहोरा का नाम दे दिया जाता है। गीत और नृत्य की सृश्टि इसी प्रकार हुई हैं

भारतीय नृत्यकला अत्यन्त पुरानी कला है, जिसका स्रोत नाट्य–वेद में निहित है। उसी के आधार पर भरत ने नाट्य ाास्त्र में नृत्यकला को विस्तार से समझाया है। भारत के अलग–अलग प्रान्तों में भाास्त्रीय आधार पर जिन तत्वों को ग्रहण किया गया, उनमें भाास्त्रीय के साथ–साथ लोक तत्वों के मिश्रण से कुछ नई भौलियाँ का जन्म हुआ और उसी के आधार पर लोक में सर्वाधिक प्रचलित नृत्य विधाएँ भारतीय भाास्त्रीय नृत्यों के नाम से जानी जाने लगी, जिनमें – भरतनाट्यम्, ओडिसी, मोहिनीअट्टम्, कथकलि, मणिपुरी और कथक प्रमुख है।

प्रस्तावना – भारतीय परम्परा में संगीत के तीन अंग माने गये है – गायन, वादन और नृत्य। ाास्त्रों में नृत्य को वाद्यों का अनुगामी बताया गया है और वाद्य वादन गीत या गायन का अनुसरण करता है। इस प्रकार से तीनों ही कलायें पारम्परिक रूप से एक दूसरे से जुड़ी हुई है।

विशय प्रवे ा – गायन, वादन और नृत्य ये तीनों ही मिलकर संगीत कहे जाते है। इन तीनों में से किसी एक के भी न होने पर सृश्टि कर पाना सम्भव नहीं है।

भारतीय नृत्यकला, कला की सबसे बड़ी वि ोशता यह है थ्क एक ओर यह भावश्रित है और दूसरी ओर लयाश्रित। भारतीय संस्कृति में नृत्य को धार्मिक एवं अध्यात्मिक महत्ता प्रदान की गई है।

वैदिक काल – प्राचीन काल में नाटक या नाट्य का प्रचार अधिक था। संगीत उस नाटक का प्रमुख अंग होता था। केवल नाट्य में ही द ार्कों को गीत, वाद्य, नृत्य और अभिनय का एक साथ आनन्द मिलता था। नाट्य और संगीत का आदि ग्रन्थ नाट्य ाास्त्र है, जो महर्शि भरत द्वारा रचा हुआ है। अधिकतर ग्रन्थकारों ने नाट्य और संगीत की जहाँ भी चर्चा की है, उसमें भरत के वाक्यों को ही प्रमाण माना है। वास्तव में भरत का नाट्य ाास्त्र एक ऐसा विलक्षण ग्रन्थ है, जिसमें नाट्य और संगीत के सम्पूर्ण अंगों पर सूत्र रूप में काफी प्रका ा डाला गया है। अन्य आचार्यों ने भरत के सूत्रों का स्पश्टीकरण भी पर्याप्त माता में किया गया है। प्राचीन काल में 'भरत' एक ात्रवाची संज्ञा हो गई थी जो नटों के लिए प्रयुक्त की जाती थी। अभिनय करने वाले को नट, केवल नृत्य करने वाले को नर्तक और मुख्य रूप से नृत्य दिखाकर गाने वाले को कु ालव या कृ ाारव कहते थे। जो गीत गाता था, उसे

भौलूश या ि ालाली और जो केवल नृत्य करता था, उसे सूत करते थे।

मुगलकाल – भारत में मुस्लमानी राज्य स्थापित हुआ। भारत की विद्या कला तथा संस्कृति को नश्ट करने की चेश्टा की गई। ई वरोपासना की भारतीय कला मनोरंजन के लिये प्रयोग की जाने लगी। दक्षिण के मन्दिरों में भगवान के समक्ष जो देवदासियाँ नृत्य करती थी, उन्हें बाद ाह के हुजूर में पे ा किया गया। बड़े–बड़े आचार्यों को उनकी ि ाक्षा के लिये महल में नौकरी दी गई।

वाजिदअली भााह – मुगलकाल के मध्य में कथक नृत्य में काफी उतर–चढ़ाव आये। किसी भाताब्दी में इस कला का सम्मान हुआ, तो किसी काल में इसे नीची निगाह से देखा गया। औरंगजेब के राज्यकाल में संगीत कला मृतप्रायः हो चुकी थी।

मुगलकाल के अन्तिम नवाब वाजिदअली भााह के नाम से सभी परिचित है, क्योंकि वे अपनी ऐया ाी के कारण संसार भर में प्रसिद्ध हो चुके हैं। वाजिदअजी भााह के दरबार में नृत्य और संगीत को दूसरा जीवन प्राप्त हो गया था। उन्होंने एक 'रहस–खाना' तैयार किया, जिसमें दर्जनों स्त्री–पुरूश संगीत और नृत्य के लिए नौकर रखे। 'नौटंकी' और रहस (रास) आदि तमा ाों में जो स्त्रियां भाग लेती थीं, वे सभी वाजिदअली भााह की बेगमें थीं, जिनकी संख्या सैकड़ों की तादात में थी।

इस युग में भारत के अन्य प्रान्तों में भी नृत्य की विभिन्न भौलियों का पर्याप्त विकास हुआ। दक्षिण भारत में विजयनगर के राजा कृश्णदेव राय के काल में कलाओं की उन्नति पराकाश्ठा पर थी। श्री वासुदेव उपाध्याय ने विजयनगर साम्राज्य का इतिहास पृश्ठ 216 पर लिखा है कि – विजयनगर राज्य में नृत्य का भी खूब प्रचार था। कृश्णदेव राय ने तो नाचने वालियों के लिए एक ''गणिका नगर'' ही बसा दिया था। उन्हें मन्दिरों में नाचने के लिए भूमि दान में दी जाती थी। स्मरणीय है कि विजयनगर राज्य में आज की भरतनाट्यम नृत्य ौली का ही वि ोश प्रचार था जो तब दासीअट्टम कही जाती थी। इसी प्रकार आन्ध्र प्रदे ा में कुचिपाई तथा यक्षगान भौली तथा केरल में कथकली नृत्य ौली अपने पूर्णतः यौवन पर थी। उधर पूर्व में उड़ीसा में ओडिसी नृत्य पूरी में आने वाले तीर्थ यात्रियों के आकर्शण का प्रमुख केन्द्र था तो बंगाल में चैतन्य महाप्रभु के कीर्तन नृत्यों तथा जाता नृत्यों का जोर था। इन्हीं के एक ि ाश्य भांकरदेव ने आसाम में 'अंकिया नट' व सत्रिय नृत्य की परम्परा प्रारम्भ की। मणिपुर का रास नृत्य भी गोविन्द देव जी के मन्दिर में नित नवरूप धारण करता जा रहा था। इस प्रकार हम कह सकते है कि वर्तमान भारत की समस्त भाास्त्रीय नृत्य भौलियों का रूप मुगलकाल में ही निखरा है, किन्तु इसमें मुगल बाद ाहों का कोई योगदान कभी नहीं रहा, यह भी उतना ही सच है।

यूरोपीय सम्यता के प्रवे ा काल में नृत्य – हिन्दी, उर्दू, मराठी, गुजराती, बंगला व अन्य भारतीय भाशाओं में इस युग में संगीत के विभिन्न पक्षों पर विपुल साहित्य की जहां सृश्टि हुई है, वहीं अनेक प्राचीन भाास्त्र ग्रंथ भी प्रका ा में आये हैं। जहां तक केवल नृत्य कला का प्र न है, इस युग में भारत की समस्त भाास्त्रीय नृत्य भौलियों को अर्न्तराश्ट्रीय स्तर पर विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ।

स्वतन्त्र भारत में नृत्यकला – 15 अगस्त 1947 को भारत के स्वतन्त्र होने के बाद से आज तक के काल में भारतीय समाज में नृत्य कला का बहुत प्रचार–प्रसार हुआ है। अब इसे मात्र पतुरियों का 'नांच' ही नहीं समझा जाता। भारत के सभी प्रमुख नगरों में नृत्य के ि ाक्षण केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। विभिन्न प्रदे ाों की माध्यमिक ि ाक्षा परिशदों तथा अनेक वि वविद्यालयों ने अपने पाठ्यक्रमों में नृत्य को भी स्थान प्रदान किया है तथा परिक्षाओं में सहस्त्रों की संख्या में प्रतिवर्श छात्र–छात्राएँ भाग ले रहें हैं। इनके अतिरिक्त कतिपय वि ि ाश्ट संस्थाएँ नृत्य भौलियों में उच्च स्तरीय व्यवसायिक प्र ि ाक्षण प्रदान कर रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. कथक नृत्य – डॉ. लक्ष्मीनरायण गर्ग
2. कथन नृत्य ि ाक्षा, द्वितीय भाग – डॉ0 पुरू दाधीच